

बहुविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देने की जरूरत: वीसी

कृषि विवि

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक के दौरान राजेंद्र चना 2, राजेंद्र मसूर 1 प्रभेद को अनुशंसित किया गया। इसके अलावा टैरो प्लांटरमशीन को भी सर्वसम्मति से अनुशंसित हुआ। इससे पूर्व विवि में चल रहे आईसीएआर एआईसीआरपी के 35, अखिल भारतीय समन्वित की 17 परियोजना समेत अन्य परियोजनाओं को वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किया।

मौके पर अपने संबोधन में कुलपति ने कहा कि शिक्षा और अनुसंधान साथ साथ चलता है।

- मसूर, घना की एक एक प्रभेद किया अनुशंसित
- तीन दिवसीय अनुसंधान परिषद की बैठक संपन्न

अनुसंधान का फायदा शिक्षा में भी मिलता है। इसके लिए शिक्षकों के लिए अनुसंधान काफी आवश्यक है। उन्होंने अनुसंधान की गुणवत्ता और उत्कृष्ट बनाने पर बल देते हुए बहुविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देने पर बल दिया। कुलपति ने शिक्षा कार्डिसिल की शुरुआत करने और टिशू कल्चर को बढ़ावा देने की बात कही।

राजेन्द्र चना 2 : डॉ राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि की डॉ माधुरी आर्या व डॉ एसबी मिश्रा के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की टीम द्वारा विकासित इस प्रभेद की औसत उपज 22 से

25 बिंबटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रभेद 115 से 120 दिनों में तैयार हो जाता है। यह अगात होने के साथ उकठा रोग, फली छेदक कीट आदि का सहनशील है। इसे बिहार के समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, दरभंगा, सासाराम, पटना, मोकामा, औरंगाबाद आदि जिलों में इसका परीक्षण किया गया। वैज्ञानिक टीम में डा माधुरी आर्या, डॉ एस बी मिश्रा, डॉ अजय कुमार सिंह, डॉ अब्बास अहमद, डॉ संगीता सहनी, डॉ सुनील कुमार, डॉ रविन्द्र प्रसाद आदि शामिल रहे।

राजेन्द्र मसूर 1: डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के वैज्ञानिक डॉ रवि कांत व टीम द्वारा विकासित यह प्रभेद 120 से 125 दिन में तैयार हो जाता है। वैज्ञानिक के अनुसार इसे 15 से 30 अक्टूबर के बीच



विद्यापति सभागार में संबोधित करते कुलपति डॉ एस पांडेय व अन्य। लगाना बेहतर है। इसकी अधिकतम उत्पादन क्षमता 20 बिंबटल प्रति हेक्टेयर है। मसूर की इस प्रभेद में 25.75 प्रतिशत है। इसका दाना गुलाबी रंग का होता है। साथ ही उकठा रोग को सहने की क्षमता होती है। वैज्ञानिक टीम में डॉ रवि कांत के अलावा डॉ एसबी मिश्रा शामिल थे।